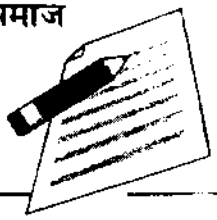

27

भारत में जाति व्यवस्था

भारतीय समाज के बुनियादी तत्वों और विभिन्न पहलुओं को समझने के बाद हम सामाजिक संस्थाओं के बारे में जिसमें आदिम, ग्रामीण एवं शहरी लोग हैं, अब इसकी एक महत्वपूर्ण संस्था जाति व्यवस्था का उल्लेख करेंगे। इस अध्याय में हम जाति के मुख्य लक्षणों, जाति और वर्ण के अन्तर, जाति और वर्ग तथा जाति व्यवस्था के परिवर्तन का उल्लेख करेंगे। जाति की अवधारणा से जुड़े हुए संस्कृतीकरण, पश्चिमीकरण और प्रजाति का उल्लेख करेंगे। जाति की उत्पत्ति स्पेन की भाषा के कास्टा से हैं। कास्टा यानी प्रजाति या ऐसा समूह, जिसमें वंशानुगत लक्षण होता है। पुर्तगालवासियों ने इस शब्द का प्रयोग जाति के लिए किया। जाति शब्द ने भ्रम पैदा कर दिया है। इसका प्रयोग वर्ण और जाति दोनों के लिए किया गया है। आपको ज्ञात है कि लोग चार जातियों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र का प्रयोग करते हैं लेकिन ये चार जातियाँ-जातियाँ न होकर वर्ण हैं। आज हम इन्हें वर्ण न कहकर जाति कहते हैं। इस अध्याय में हम जाति का मतलब जाति से ही लेते हैं, वर्ण से नहीं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- जाति व्यवस्था की परिभाषा और लक्षण समझ सकेंगे;
- वर्ण और जाति के बीच अन्तर जान जायेंगे;
- जाति एवं वर्ग में अन्तर को समझेंगे; और
- जाति व्यवस्था में आने वाले परिवर्तन की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

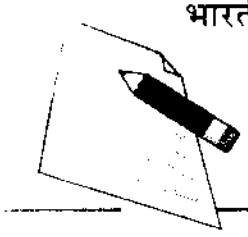

Notes

27.1 जाति की परिभाषा

जाति की परिभाषा एक वंशानुगत और अन्तर्वैवाही समूह की तरह की जा सकती है। इसके परम्परागत सामान्य नाम, व्यवसाय एवं संस्कृति होती है। इसकी गतिशीलता अपेक्षित रूप से कट्टर होती है। इसकी प्रतिष्ठा स्पष्ट होती है और यह एक सजातीय समुदाय होता है। वर्तमान परिस्थितियों में जाति व्यवस्था एक औपचारिक संगठन की तरह है और जिसमें अधिक कठोरता नहीं है। अब यह व्यवस्था राजनीति से जुड़ गयी है। इस तरह उपरोक्त विवरणों के आधार पर हम जाति के निम्न लक्षणों का वर्णन कर सकते हैं:

(1) **समाज का खण्डात्मक विभाजन:** अत: भारतीय सामाजिक स्तरीकरण अधिकांश रूप में जाति पर निर्भर है। देश में कई जातियाँ विकसित हैं, जिनकी जीवन पद्धति जाति पर निर्भर है। जाति की सदस्यता जन्म पर आधारित है तथा जाति वंशानुगत है।

(2) **सोपान व्यवस्था:** जातियाँ पवित्रता एवं अपवित्रता के आधार पर उच्च और निम्न धंधों पर बनी हैं। यह व्यवस्था एक सीढ़ी की तरह है, जिसमें सबसे ऊँची जाति को उच्च श्रेणी में रखा जाता है तथा अपवित्र धन्धा करने वाली जातियों को निम्न श्रेणी में रखा जाता है। उदाहरण के लिए, ब्राह्मण का कार्य कर्मकाण्ड और शिक्षण देना है। इस व्यवसाय को सबसे अधिक पवित्र माना जाता है। इसी कारण सोपानिक व्यवस्था में इसे उच्च स्थान प्राप्त है। दूसरी ओर सफाईकर्मी का काम झाड़ू लगाना है इसलिए इन जातियों को सोपान में अपवित्र धन्धों की श्रेणी में रखा जाता है।

(3) **भोजन, खानपान और धूम्रपान पर प्रतिबन्ध:** सामान्यतया जातियाँ आपस में एक दूसरे का खानपान, एक ही पंगत में बैठना या मद्यपान या धूम्रपान करना स्वीकार नहीं करती। उदाहरण के लिए, ब्राह्मण दूसरी जातियों से भोजन नहीं लेते। वास्तव में खानपान का सारा मसला बहुत जटिल है। उदाहरण के लिए, उत्तर प्रदेश में कान्य कुब्ज ब्राह्मणों में कई उप विभाजन है। कहा जाता है कि एक बारह कान्य कुब्ज और तेरह अंगीठियाँ अर्थात कान्य कुब्ज ब्राह्मण–ब्राह्मण तो है लेकिन वे कई उप श्रेणियों में बंटे हैं। खाने के दो प्रकार हैं: पक्का खाना यानी घी से पकाया हुआ खाना– इसमें पुड़ी, कचौड़ी और पुलाव है। दूसरा खाना कच्चा है, इसे केवल पानी द्वारा पकाया जाता है। इस खाने में चावल, दालें और शाक-सब्जी होते हैं। कुछ जातियों में केवल पक्का खाना ही खाने की अनुमति होती है। इस विभिन्नता के होते हुए भी ऊँची जातियों के लोग सामान्यतया नीची जातियों के हाथ का बना खाना स्वीकार नहीं करते। यही सिद्धान्त धूम्रपान पर भी लागू होता है।

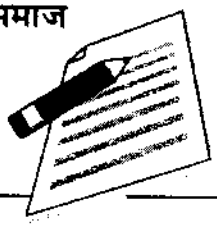

Notes

(4) **अन्तर्विवाह:** इसका अर्थ है कि एक जाति का सदस्य अपनी जाति से बाहर विवाह नहीं करता। यह अन्तर्विवाह है। अन्तर्जातीय विवाह पर प्रतिबन्ध है। इस प्रतिबन्ध के होते हुए भी पढ़े-लिखे लोग और विशेषकर शहरी क्षेत्रों के लोग धीरे-धीरे अन्तर्जातीय विवाह करने लगे हैं।

(5) **पवित्र और अपवित्र:** पवित्र और अपवित्र की अवधारणाएँ जाति व्यवस्था की मुख्य विशेषताएँ हैं। इन अवधारणाओं का प्रयोग आदमी के कामकाज, व्यवसाय, भाषा, वेशभूषा और भोजन की आदतों से जाना जा सकता है। उदाहरण के लिए – मद्यपान करना, शाकाहारी भोजन को ग्रहण करना, उच्च जातियों द्वारा छोड़े हुए भोजन को प्राप्त करना। ऐसे धन्धों में काम करना जो मरे हुए जानवरों को उठाता है, झाड़ू लगाना, गंदे कचरे को उठाना अपवित्र है। धन्धे के ये प्रतिबन्ध होते हुए भी आजकल ऊँची जातियाँ भी ऐसा काम करने लगी हैं। जूते के कारखाने में काम करना, ब्यूटी पार्लर में बाल काटने पर प्रतिबन्ध नहीं रहा।

(6) **व्यावसायिक संगठन:** सामान्यतया प्रत्येक जाति के कुछ निश्चित धन्धे होते हैं और वे इन धन्धों को छोड़ नहीं सकते। उदाहरण के लिए, ब्राह्मणों का काम पुरोहिती करना, पठन-पाठन करना, कायस्थ राजस्व के आंकड़ों को देखते हैं। बनिए व्यापार करते हैं। चमार मरे हुए जानवरों की खाल उधेड़ते हैं। आज औद्योगीकरण तथा शहरीकरण के कारण कुछ लोगों ने अपने परम्परागत व्यवसायों को छोड़ दिया है। यह होते हुए भी ग्रामीण क्षेत्र में अब भी लोग परम्परागत व्यवसाय करते हैं। शहरों में भी कुछ नाई दिन में तो किसी दफ्तर में काम करते हैं परन्तु सुबह-शाम बाल काटने का धन्धा करते हैं।

(7) **नये सामाजिक क्षेत्र में सामाजिक-धार्मिक निर्योग्यताएँ एवं अधिकार:** कुछ निम्न जातियों को आज भी मंदिर में प्रवेश नहीं करने दिया जाता। वे साहित्यिक भाषा का प्रयोग नहीं कर सकते, उन्हें सोने के आभूषण नहीं पहनने दिये जाते। वे छतरी लेकर बाजार में नहीं घूम सकते। ये सब व्यवहार के प्रतिमान आज बदल गये हैं।

(8) **रीतिरिवाज, पहनावा और बोलचाल में अन्तर:** हर एक जाति की अपने जीवन की एक निश्चित पद्धति होती है। इस जाति के रीतिरिवाज, पहनावा और बोलचाल होती है। उच्च जातियाँ साहित्यिक शब्दों का प्रयोग करती हैं। जबकि निम्न जातियाँ स्थानीय बोली बोलती हैं।

(9) **संघर्ष का निदान करने के लिए कार्यपद्धति:** जब जातियों में संघर्ष होता है, तनाव होता है तो इसके लिए प्रत्येक जाति का एक परम्परागत तन्त्र होता है, जिनके माध्यम से तनाव में सुलह लायी जाती है। जातीय और अन्तर्जातीय झगड़ों को जाति पंचायत के माध्यम से हल किया जाता है।

पाठगत प्रश्न 27.1

कोष्ठक में दिये गये उपयुक्त शब्दों द्वारा रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:

(1) पक्का खाना ..... द्वारा बनाया जाता है। (पत्तियाँ, पानी, घी)

(2) ब्राह्मणों का व्यवसाय.....है। (खाल पर काम करना, पुरोहिती, व्यवसाय)

(3) अछूतों की पहचान आजकल.....होती है।
(अन्य पिछड़े वर्ग, सवर्ण, दलित)

(4) जाति की सदस्यता..... होती है। (वंशानुगत, अर्जित)

27.2 जाति और वर्ण में अन्तर

जैसा कि आप जानते हैं कि भारतीय समाज में चार वर्ण हैं। वर्णों का पहला उल्लेख ऋग्वेद में हैं, यानी लगभग 1500 ईसा पूर्व वैदिक काल में वर्ण थे। वर्ण का आशय रंग से हैं। प्रारम्भ में अछूत नहीं थे। वर्ण व्यवस्था प्रारम्भ में कठोर नहीं थी। वैदिक काल के बाद में यानी 1000 ई.पू. शुद्रों का उल्लेख है। इस भाँति 1000 ई. पू. वर्ण व्यवस्था प्रारम्भ हुई। ई. पू. दूसरी शताब्दी और उसके बाद विभिन्न व्यवसायों के कारण कई औद्योगिक समूह उत्पन्न हुए। देखा जाय तो वर्ण व्यवस्था भारतीय व्यवस्था का केवल पुस्तकीय दृष्टिकोण है। जबकि जाति व्यवस्था आज व्यावहारिक रूप में देखने को मिलती है। आज वर्ण नहीं मिलते, जातियाँ मिलती हैं। वर्ण तो केवल चार हैं लेकिन जातियाँ 4000 हैं। भारत के प्रत्येक क्षेत्र में कोई 200 जातियाँ मिलती हैं। जातियों का सोपान सम्पूर्ण भारत में मिलता है यानी ब्राह्मण सबसे ऊपर फिर क्षत्रिय, वैश्य और अंतिम स्थान पर शुद्र हैं। जातियों की यह सोपानिक व्यवस्था सारे देश में समान है लेकिन विभिन्न स्थानों पर यह सोपान बदल भी जाता है, आज की बदलती स्थिति कहीं पर ब्राह्मण शीर्ष स्थान पर है, दूसरे क्षेत्रों में कोई अन्य जाति जैसे कि राजपूत शीर्ष स्थान पर हैं। ऐसे भी स्थान हैं, जहाँ दलितों को ऊँचा स्थान मिलता है। आज की परिस्थिति में धर्मनिरपेक्ष लक्षण अर्थात् आर्थिक और राजनीतिक शक्ति किसी भी जाति को शीर्ष स्थान दे देती है। वर्ण व्यवस्था में ऐसा नहीं है। धार्मिक आधारों पर उच्च स्थान वर्णों में होता है जबकि अछूतों का वर्ण व्यवस्था में अनिवार्य रूप से निम्न स्थान होता है। देश में कहीं भी उच्च जातियाँ सोपान में ऊपर नहीं समझी जाती। इसलिए किसी भी वर्ण और जाति को समान नहीं समझना चाहिए।

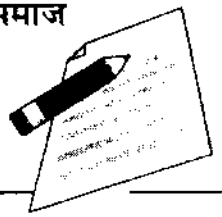

27.3 जाति और वर्ग में अन्तर

जाति एक वंशागत समूह है, और वर्ग की प्रकृति निरपेक्षता की है। वर्ग व्यवस्था में बहिर्विवाह और अन्तर्विवाह होते हैं। इसमें गतिशीलता ऊपर की ओर होती है या नीचे की ओर। इसमें व्यक्ति जिसमें पैदा हुआ है– उसमें रह सकता है तथा यह अनिवार्य रूप से एक सामाजिक और आर्थिक समूह है। भारत में सामान्यतया तीन वर्ग पाये जाते हैं: उच्च, मध्यम एवं निम्न। प्रत्येक वर्ग दो भागों में बंटा होता है। एक भाग उच्च होता है तो दूसरा निम्न। इसी प्रकार उच्च मध्यम वर्ग और निम्न मध्यम वर्ग। इसी तरह उच्च निम्न वर्ग और निम्न, निम्न वर्ग। वर्ग और जाति में बहुत बड़ा अन्तर यह है कि जाति कर्मकाण्ड पर निर्भर होती है जबकि वर्ग धर्मनिरपेक्ष होता है। कर्मकाण्ड में उच्चता का कारण धार्मिक मिथक है और धर्मनिरपेक्ष वर्णों का आशय आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक है। वर्ग चेतना पाई जाती है लेकिन जाति चेतना नहीं। अस्तु, शहरी क्षेत्रों में जातियों को भी आर्थिक दृष्टि से देखा जाता है।

पाठगत प्रश्न 27.2

निम्नलिखित के जोड़े बनाइए:

(1) अखिल भारतीय	जाति
(2) अर्जित प्रस्थिति	वर्ग
(3) अछूत	वर्ण
(4) चार हजार समूह	दलित

27.4 जाति व्यवस्था में परिवर्तन

जाति व्यवस्था में सामान्य परिवर्तन पिछली दो शताब्दियों में आए हैं। इनमें विशेष परिवर्तन पचास वर्षों में आया है। इस परिवर्तन के कारण संस्कृतीकरण, पाश्चात्यकरण, आधुनिकीकरण, प्रभव जाति, औद्योगीकरण, नगरीकरण, प्रजातान्त्रिक विकेन्द्रीकरण महत्वपूर्ण है। जाति व्यवस्था में आने वाले परिवर्तन को निम्न बिन्दुओं में रखा जा सकता है:

(1) **संस्कृतीकरण:** यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें निम्न जाति के लोग ऊँची जातियों के व्यवहार, प्रतिमान, जीवन पद्धति, संस्कृति आदि का अनुकरण करते

हैं। लेकिन ऐसा करने के लिए उन्हें अपने अपवित्र व्यवसाय और अपवित्र आदतों को जैसे कि मांसाहार और मद्यमान छोड़ना पड़ता है। पिछले दिनों में अछूतों को इस तरह सांस्कृतिक सुधार करने का अवसर नहीं था। केवल मध्यम वर्ग की जातियाँ ही यह सुधार कर सकती थी। संस्कृतिकरण के लिए एक जाति में दशाएँ होनी चाहिए: (क) जातियों में सवर्ण जाति होने की संभावना हो, (ख) इस जाति की आर्थिक अवस्था बढ़िया होनी चाहिए, (ग) इस जाति के खाते में कुछ ऐसे मिथक होने चाहिए, जो उन्हें ऊँचा स्थान दे सकें। इस भाँति संस्कृतिकरण में व्यक्ति में सुधार होना महत्वपूर्ण नहीं है, सम्पूर्ण समूह में सुधार होना चाहिए। संस्कृतिकरण एक लम्बी प्रक्रिया है, इसमें परिवर्तन एकाएक नहीं आता। व्यक्ति का परिवर्तन तो प्रस्थितिजनक होता है। आवश्यक यह है कि एक निश्चित जाति का सम्पूर्ण जाति व्यवस्था में विलय। इस भाँति इस प्रक्रिया में निम्न जातियाँ देश के विभिन्न भागों में छोटी स्थिति से उच्च स्थिति को प्राप्त करते हैं।

आगरा के जाटव अपने आपको 1940 के दशक में ऊँचा बनाना चाहते थे। जाति से वे चमार हैं। ब्रिटिश युग में एक समय ऐसा था जब जूतों की मांग बढ़ गयी थी। इस काल में जाटव आर्थिक दृष्टि से समृद्ध हो गये। उनकी स्थिति क्षत्रियों के बराबर हो गयी। इन जाटवों ने एक मिथक प्रसारित किया: रामायण काल में जिसे स्वामी आत्माराम ने लिखा था कि जाटव त्रेता युग में क्षत्रीय थे। जब परशुराम क्षत्रियों का संहार कर रहे थे, तब जाटव जंगल में छिप गये और अपने आपको बचाने के लिए वे जानवर की खाल के साथ काम करने लगे। जब उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो गयी तब उन्होंने खाल के धन्धे को अपना लिया। अब क्योंकि जाटव पैसे वाले हो गये हैं वे अपने आपको क्षत्रीय कहते हैं। हुआ यूँ कि जाटव वास्तव में क्षत्रीय थे और परशुराम के क्षत्रिय संहार से बचने के लिए चमार हो गये। लेकिन चमार के धन्धे में उन्हें लाभ था, इसलिए आज वे अपने आप को क्षत्रीय बताते हैं। आगरा के स्थानीय जाटवों ने इसे स्वीकार नहीं किया, बाद में ये स्थानीय जाटव संगठित हो गये और इन्होंने अपने आपको राजनीति के क्षेत्र में एक वोट बैंक के रूप में स्थापित किया। इस भाँति असफल संस्कृतिकरण ने जाटवों के लिए उच्च गतिविधि का रास्ता खोल दिया।

(2) **पश्चिमीकरण:** पश्चिमीकरण का आशय पश्चिमी जीवन पद्धति, भाषा, पोशाक और व्यवहार के प्रतिमान को कहते हैं। भारत में ब्रिटिश प्रभाव देखने को मिलता है। पश्चिमीकरण के निम्न लक्षण है: (1) विवेकपूर्ण दृष्टिकोण अर्थात, वैज्ञानिक और लक्ष्यपरक नजरिया (2) भौतिक प्रगति में रुचि, (3) आज के भारत में संचार प्रक्रिया और मास मीडिया में विश्वास (4) अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा (5) उच्च सामाजिक गतिशीलता। उच्च जातियों ने पहले अपने स्वयं का पश्चिमीकरण किया। बाद में निम्न जातियों ने भी पश्चिमीकरण को अपनाया।

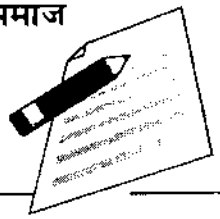

Notes

इस प्रक्रिया ने जाति की कठोरता को बदल दिया और यह लचीली व्यवस्था बन गई खास करके ऐसा नगरीय क्षेत्रों में हुआ।

(3) **आधुनिकीकरण:** यह ऐसी प्रक्रिया है, जिसका भरोसा वैज्ञानिक दृष्टिकोण में है। इस प्रक्रिया में विवेकपूर्ण अभिवृत्तियाँ होती हैं। उच्च सामाजिक गतिशीलता होती है। सम्पूर्ण जनसमूह का परिवर्तन होता है। लोगों का स्वतन्त्रता में विश्वास होता है, समानता और बंधुत्व आते हैं, इस प्रक्रिया में लोग भागीदारी करते हैं। आधुनिकीकरण में संस्थाओं, संरचनाओं, अभिवृत्तियों आदि के क्षेत्र में सामाजिक-सांस्कृतिक और वैयक्तिक स्तर पर परिवर्तन आता है। शहरों में जातियाँ धीरे-धीरे वर्ग बन रही है। हमारे यहाँ मध्यम वर्ग राष्ट्रीय दृष्टिकोण एवं नये उद्देश्यों को लेकर आगे आ रही है। आधुनिकीकरण पश्चिमीकरण की तुलना में अधिक विशाल अवधारणा है। कोई भी एक संस्कृति पश्चिमी मूल्यों को लेकर अपने आपको आधुनिक कर सकती है। हमारे देश के लिए यह कहा जा सकता है कि हम परम्पराओं को छोड़े बिना भी आधुनिक हो सकते हैं। हमारी जाति वयवस्था ने कई आधुनिक तौर-तरीकों को अपना लिया है। ऐसा करने में हमने लोगों को शिक्षा-दीक्षा दी है, औपचारिक संगठन बनाये हैं तथा लोगों को यह चेतना दी है कि हम आधुनिक हो रहे हैं।

(4) **प्रभवजाति:** 20वीं शताब्दी में प्रभवजाति की अवधारणा ग्रामीण अध्ययनों के परिणामस्वरूप हमारे सामने आयी है। इसका मतलब हैं कि गाँव की कुछ जातियाँ आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से प्रभावी हो जाती हैं और वे एक क्षेत्र विशेष में महत्वपूर्ण समझी जाती हैं। सामान्यतया प्रभव जाति वह है, जिसके पास (क) अपने क्षेत्र में कृषि भूमि अधिक होती है, दूसरे शब्दों में यह जाति आर्थिक दृष्टि से समृद्ध होती है। (ख) प्रभव जाति राजनैतिक रूप में यानी वोट बैंक की तरह शक्तिशाली होती है। (ग) इस जाति की जनसंख्या अधिक होती है। (घ) इस जाति का कर्मकाण्ड में ऊँचा स्थान होता है। (ङ) इस जाति में अंग्रेजी माध्यम से पढ़े-लिखे लोग होते हैं। (च) यह जाति कृषि के क्षेत्र में अग्रणी होती है। (छ) यह जाति शारीरिक दृष्टि से बाहुबलियों की होती है। यह होते हुए भी प्रभव जाति का दायरा केवल उच्च जातियों तक ही नहीं होता। प्रभव जाति निम्न जातियों में भी पायी जाती है।

(5) **औद्योगीकरण और नगरीकरण:** इन दोनों प्रक्रियाओं ने जाति व्यवस्था को प्रभावित किया है। लोगों का स्थानान्तरण गाँवों से शहरों की ओर औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण हुआ है। शहरों में जाति के सख्त नियमों का पालन करना संभव नहीं है। आज के समय में शहरों में कुछ ऐसे स्थान हैं जैसे कि बस, रेल, होटल, ऑफिस, कैन्टीन आदि जहाँ जाति के प्रतिबन्धों को लागू करना संभव नहीं है। इसी कारण जाति को एक लचीला समूह बना दिया गया है।

(6) **प्रजातान्त्रिक विकेन्द्रीकरण:** पंचायतराज, स्वायत्तशासी संगठनों के गाँवों में

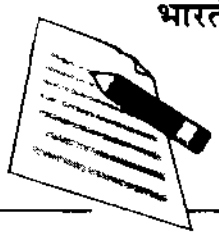

Notes

स्थापित होने से स्थिति बदल गयी है। पंचायती राज में आरक्षण है और इसने निम्न जातियों को सशक्त बना दिया है।

(7) **जाति एवं राजनीति:** जाति एवं राजनीति का सम्बन्ध कोई आज से नहीं है। वर्ण व्यवस्था के युग में ब्राह्मणों का प्रभावी होना सामान्य बात थी। यह कहा जाता है कि जाति एवं राजनीति का चोली दामन का साथ है। राजनीति जातियों को वोट बैंक में बदल देती है। अब जातियों को राजनीति के साथ में जोड़ा जाता है। जाति एवं राजनीति के सम्बन्ध में निम्न जातियों को शक्तिशाली बना दिया है। अब जातियों को चुनाव के माध्यम से अपने आपको ताकतवर बनाने का अवसर मिल गया है। दलित जाति इसका प्रमाण है। जहाँ दलित प्रभावशाली हैं वहाँ विभिन्न राज्यों में दलितों में धड़बन्दी हो गयी है। इस धड़बन्दी के कारण निम्न जातियाँ उच्च जातियों के साथ संघर्ष में भी आ जाती हैं। देश के कई क्षेत्रों में उच्च व निम्न जातियाँ परस्पर विरोधी हैं। ऐसा लगता है कि यह संक्रमण काल है। अच्छी शिक्षा, जनजागृति के कार्यक्रम, रोजगार के अवसर, भारतीय समाज को एक उन्नत समाज की ओर ले जायेंगे।

(8) **जाति और अर्थव्यवस्था:** परम्परागत रूप से यह कहा जाता था कि विशेष प्रकार के आर्थिक क्षेत्र में जाति व्यवस्था भारतीय समाज के लिए उपयुक्त थी। यह और कुछ न होकर जजमानी व्यवस्था थी। यह व्यवस्था परम्परागत थी। जजमानी व्यवस्था में जो सेवा देने वाली जातियाँ थी, वे कमीन थी। कमीन उच्च जातियों यानी जजमान को सेवा देती थी। कमीन के पास धन्धों की विशेष कुशलता थी और इसे देने के बदले में जजमान उन्हें यानी कमीनों को अनाज या नकद मुद्रा देते थे। इस तरह गाँवों में कमीन और जजमान के प्रकार्यात्मक सम्बन्ध थे। लेकिन बाजार अर्थव्यवस्था के प्रवेश और भूमि सुधारों ने जजमानी व्यवस्था को कमजोर कर दिया है।

इस तरह से जाति व्यवस्था में कई परिवर्तन आये हैं। शहरी क्षेत्रों में लोग जातियों के मानदण्डों को नहीं मानते। जाति के क्षेत्र में यदि कोई महत्वपूर्ण तथ्य बदलने से रह गया है तो यह अन्तर्वैवाहिकी है। आज भी जातियाँ अन्तर्विवाही समूह हैं। यह भी देखने में आया है कि अब अन्तर्जातीय और अन्तर्विवाह होने लगे हैं।

पाठगत प्रश्न 27.3

कोष्ठक में दिये गये उपयुक्त शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:

(1) संस्कृतिकरण से अभिप्राय है कि ..... जाति उच्च जाति हो जाती है। (निम्न, मध्यम, उच्च)

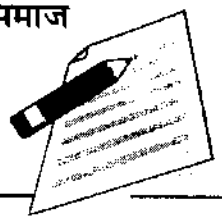

Notes

(2) पश्चिमीकरण से तात्पर्य है कि ..... मूल्यों को अपनाना। (जापानी, पाश्चात्य, भारतीय)।

(3) आधुनिकीकरण से अभिप्राय यह है कि हमें..... दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। (परम्परागत, अनुदारवादी, तार्किक)

(4) प्रभव जाति की ..... जनसंख्या होती है। (अधिक, कम, बहुत कम,)

आपने क्या सीखा

- इस पाठ में आपने भारतीय सामाजिक संरचना का मुख्य आधार जाति व्यवस्था के बारे में जाना।
- भारतीय समाज में जाति व्यवस्था एक पुरानी व्यवस्था है।
- पिछले दिनों में इस व्यवस्था ने वस्तुओं व सेवाओं के विनिमय द्वारा विभिन्न समूहों में सौहार्दता का वातावरण पैदा किया है।
- सौहार्द के होते हुए भी अस्पृश्यता के कारण इसकी आलोचना भी हुई है।
- संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण, प्रजातान्त्रिक विकेन्द्रीकरण और शहरीकरण के कारण जाति व्यवस्था में कई परिवर्तन आये हैं।
- शहरी क्षेत्रों में जाति व्यवस्था में ये सब परिवर्तन दिखायी देते हैं। जातियों में वर्ग व्यवस्था भी आ गयी है।

पाठान्त प्रश्न

(1) वर्ण और जाति में क्या अन्तर है?

---

(2) जाति और वर्ग के अन्तर की संक्षेप में विवेचना कीजिए।

---

(3) संस्कृतिकरण किसे कहते हैं?

---

(4) प्रभव जाति के लक्षणों की विवेचना कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

27.1

(1) वर्ण

(2) वर्ग

(3) दलित

(4) जाति

27.2

(1) घी

(2) पुरोहिती

(3) दलित

(4) वंशानुगत

27.3

(1) निम्न

(2) पाश्चात्य

(3) तार्किक

(4) बड़ा